Chapter- 6

षष्ठम् अध्याय

उपसंहार

दलित साहित्य आधुनिककाल की देन है किंतु वैदिककाल से इसके सूत्र किसी न किसी रूप में दिखाई देते है । जहाँ तक दलितों की संवेदना, समस्याएँ एवम् अभिव्यक्ति का सवाल है वहाँ समकालीन हिन्दी साहित्य में विशेषत: दलित साहित्य को केन्द्र में रखना पड़ता है । सदियों से जिस वर्ग का शोषण होता रहा है, दमन होता रहा है उनकी सही और सशक्त अभिव्यक्ति कहानियों के माध्यम से ही हो सकती है । कथा मानव के हाथ तब लगी होगी जब अनुभव दूसरों को सुनाने की भाषा उसमें प्रकट हुई होगी। जब हम गुजराती और हिन्दी दलित कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन करते है तब साहित्य, समाज, मानवता एवम् कलम की प्रतिबद्धता की कसोटी होती है । समय के परिप्रेक्ष्य को साथ में रखते हुए परिवर्तन जागृतता और संघर्ष के फलस्वरूप जो दिशाएँ खुल चुकी है उसका ही चित्रण कहानियों में हुआ है । सामाजिक यथार्थ और मानवअधिकार के बीच मानो एक स्पर्धा हो रही हो इसलिए चाहे प्रादेशिकता अलग-अलग हो मगर दलितों के जीवन संबंधी यातनाएँ और दुःखों की अभिव्यक्ति में कोई अंतर नहीं है ।

सदियों से अपनी परिस्थितियों के संदर्भ में उपेक्षा को सहनेवाला एक वर्ग हमारे सामने उभरकर आता है । जो अपनी चेतना से सामाजिक सरोकार एवम् सामाजिक अंर्तविरोध से उपर उठने का प्रयास करता है । जरूरत पड़ने पर समाज से टक्कर लेता है, सत्ता से लड़ाई लड़ना है और जुल्म और शोषण के विरूद्ध संघर्ष करते-करते सर्जनात्मक दुनिया में प्रवेश करता है । मैंने अपने इस शोधप्रबंध में हिन्दी और गुजराती दलित कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन करते-करते ऐसी ही अनुभूति की है । जिसे समीक्षात्मक रूप से कहानी के दायरे में रहकर स्पष्ट की है जिसमें समाज व्यवस्था से उत्पन्न मान्यताएँ व्यवहारिक असंतुलन और उन सबसे पैदा होनेवाली विकराल समस्याओं का पर्दाफाश किया है । कहानियों के पात्रों के माध्यम से जुल्म और मुक्ति की एक बड़ी जंग का चित्रण किया है । कहीं सरकारी व्यवस्था तंत्र की अन्यायपूर्ण नीति तो कहीं वेपार के नाम पर दलितों का तिरस्कार एवम् अवगणना का संकोच भी खिंचा है । इतना ही नहीं नंगे, अधभूखे बच्चे, लाचार दलित महिलाएँ, मज़दूर और शिक्षित दलित कर्मचारियों के शोषण का सार्वत्रिक

शिकार भी किया है । स्वाधीनता के बाद भी स्वर्णो की मानसिकता को जड़मूल से बदलने में थोड़ा वक्त तो लगेगा एक तरफ ग्लोबलाईजेशन हो रहा है तो ज्ञान की क्षितिज का व्यापक फैलाव हो रहा है ऐसी स्थिति में इस प्रकार के शोधकार्य के अध्ययन से आनेवाले समय में सामाजिक समरसता में जरूर परिवर्तन आएगा । आज कहीं-कहीं सवर्णो कॉलॉनियों में दलित रहने लगा है मगर गाँव की स्थिति आज भी वैसी की वैसी ही है । आज भी कुछ गाँवों में दलितों के शादी-ब्याह के प्रसंग पर ढोल बज़ाना, बैड़ बज़ाना या जुलूस निकालना भी संभव नहीं है और हम शहर की हवा को हर गाँव में भेज तो सकेत नहीं है ? लेकिन इतना जरूर है कि दलित कहानियों को पढ़कर कुछ गेरदलित लेखकों ने भी इस दिशा में अपनी सक्रियता दिखाई है जो भविष्य में सामाजिक समरसता में दलित साहित्य की एक अहम् भूमिका को न्याय दिला सकती है ।

प्रस्तुत शोधप्रबंध में सामाजिक सरोकार को मैंने केन्द्र में रखा है । इसमें जिन कहानीकारों की रचनाओं को मैंने चुना है वे सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक और मानवअधिकार से संबंधित है । इन कहानियों के अध्ययन से इतना तो स्पष्ट हुआ है कि भारतीय समाज व्यवस्था में दलितों की जो स्थिति थी उसमें आज भी कुछ ज्यादा परिवर्तन नहीं आया । इसलिए गेरदलितों की मानसिक विचारधारा को परिवर्तित करने में इस शोधप्रबंध की कहानियाँ दिशा निर्देशन की आशा के साथ मेरे शोधकार्य के अध्ययन का चुनाव इस प्रकार के विषयों से करने का प्रयास है ।

शोध-कार्य के प्रथम अध्याय में "दलित की व्याख्या, स्वरूप एवं सीमा विस्तार" में संस्कृत, मराठी, हिन्दी शब्दकोश के आधार पर व्याख्या स्पष्ट करने का प्रयत्न है । दलित की परिभाषा देकर दलित इतिहास के परिप्रेक्ष्य के अंतर्गत वैदिककाल से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात की स्थिति दर्शाते हुए दलित शब्द की उत्पत्ति में आधुनिक काल में प्रयोग के साथ असुर से विश्व दलित और दलित भारत में दलित शब्द की उत्पत्ति का निर्देश करके दलित वर्ग के उत्थान संबंधी आंदोलन में धार्मिक प्रयास, भक्ति आंदोलन, ब्रह्मसमाज, प्रार्थनासमाज, आर्यसमाज, रामकृष्ण मिशन, थियोसोफिकल सोसायटी, महात्मा गांधी, ज्योतिबा फूले, डॉ. भीमराव रामजी अम्बेड़कर, महाराजा सयाजीराव गायकवाड, स्वातंत्रवीर सावरकर के आंदोलन की विस्तृत जानकारी प्रदान की गई है ।

द्वितीय अध्याय में "हिन्दी साहित्य का उद्‌भव और विकासयात्रा" में वैश्विक धरातल पर दलित साहित्य (दलित साहित्य का विशाल भौगोलिक एवं भाषायी धरातल) पर विचार किया गया है । जिसमें दलित साहित्य की परिभाषा, आवश्यकता, साहित्यकार एवम् वैश्विक धरातल पर अमरीका का ब्लेक लिटरेचर, अफ्रिकी साहित्य में दलित चेतना निर्देशन है ।

भारत में दलित साहित्ययात्रा में कवि हीरा डोम, हिन्दी दलित साहित्य एवं उत्तर भारत, मध्यभारत, पश्चिम भारत सहित दक्षिण भारत, उड़िया, तेलुगु, मलयालम दलित साहित्य पर प्रकाश डाला गया है ।

तृतीय अध्याय में "हिन्दी-गुजराती दलित कहानी का प्रारंभ और विकासयात्रा" के अध्ययन में हिन्दी कहानी के उद्‌भव एवं विकास में भारतेन्दुयुग, द्विवेदीयुग, प्रेमचंदयुग, आधुनिकयुग के साथ हिन्दी दलित कहानी का प्रारंभ एवं विकासयात्रा का उद्‌घाटन किया है । गुजराती कहानी के रूप को स्पष्ट करते हुए गुजराती दलित कहानी का प्रारंभ एवं विकासयात्रा के साथ दोनों भाषा की दलित कहानी का महत्व दिखाने का प्रयत्न रहा है और विश्लेषण करने का मेरा उद्‌देश्य रहा है ।

चतुर्थ अध्याय में "हिन्दी-गुजराती दलित कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन" में दोनों भाषा की दलित कहानियों का चयन करके तुलनात्मक अध्ययन के साथ तुलनात्मक साहित्य की विभावना एवं उपादेयता दर्शायी है ।

हिन्दी-गुजराती दलित कहानियों का विश्लेषण के अंतर्गत अपमानबोध, मानवगौरव, जातिवाद का विरोध, विद्रोह की भावना, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, शोषण के प्रति जागरूकता, नारीभावना, समाज के प्रति अस्मिता की पहचान दोनों भाषा की कहानियों के द्वारा विश्लेषण करके दलित भावना की अभिव्यंजना प्रस्तुत की गई है ।

पंचम् अध्याय में "दलित समस्या, समाधान और दलित साहित्य का भविष्य" पर दृष्टिपात करके साहित्यिक योगदान को समझाया गया है । दलित साहित्य की अवधारणा से लेकर दलित साहित्य संबंधी उसके प्रेरणास्त्रोत जैसे मुद्‌दों का आधार बनाकर पूर्ण किया गया है ।

षष्ठम् अध्याय उपसंहार है जिसमें हिन्दी-गुजराती दलित कहानियों की पृष्ठभूमि, दलित परिवेश एवम् सामाजिक, मानवीय गौरव और अस्मिता के

यथार्थ चित्रण को केन्द्र में रखा गया है । हिन्दी और गुजराती अलग-अलग भाषाओं के कहानीकारों ने अपनी सहानुभूति को प्राधान्य देकर सामाजिक विषमता, अन्याय, अत्याचार, शोषण और मानवअधिकारों से वंचित रहने की परंपरागत रीति-नीतियों का अंकन किया है । जिसमें बदलते हुए मानवगौरव की अवधारणा को ध्यान में रखते हुए दलित समाज की विभिन्न समस्याओं का समाधान ढूँढने की सही दिशा में कोशिश की गई है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध के सभी अध्यायों के अध्ययन से मैं इस निष्कर्ष पर पहुँची हूँ कि समाज के अंदर पनपते हुए बहुत पुराने नासूर का इलाज सिर्फ शब्दों के द्वारा करने में सर्जक सफल हो सकता है वैसे ही शोधकार्य भी दलित साहित्य की सामग्री को अपने अनुभवों के माध्यम से पाठकों तक पहुँचाकर सफल हो सकता है । जहाँ ठुकराएँ हुए लोग है उनकी यथार्थ कहानियों से गुजरते समय मेरी अंतरआत्मा मुझे बार-बार यह पूछती रही है कि समाज का यह कैसा विचित्रि रूप है ? पुरानी रूढ़ियाँ और गलत परंपराओं कि कंटीली झाड़ियों को साफ़ करने में अभी भी कितना वक्त लगेगा ! एक आदमी दूसरे आदमी से कब तक फासला बनाएँ रखेगा यदी आज पूरा विश्व बराक ओबामा को महान राष्ट्र के अभिनायक के रूप में स्वीकार कर सकता है तो वेदकालीन, मनुस्मृतिकालीन, रामायण-महाभारतकालीन से लेकर वर्तमान पढ़ा-लिखा शिक्षित और संस्कारी दलित मानव का स्वीकार कब होगा ? मेरी कोशिश यह रही है कि दलितों की अस्मिता उज़ागर करते हुए उन्हें समाज के बीच लाकर खड़ा करना है उसे आगे बढ़ाना है और उनका आनेवाला कल हर मुक्ति से प्रसन्न हो और समग्र शोध के अध्ययन का भवितावय डॉ. कल्याण वैष्णव की इन पंक्तियों के साथ प्रस्तुत करती हूँ -

"नयी ज़मीन की नयी सोच से बनेगा नया आसमाँ ।
परंपरा के ज़माने से एक और नया बनेगा जहाँ ।।
हजारों साल से कलम चली ओरों के कदम पर ।
मगर अब राह खुद चली कुछ नए निशाँ फर ।।"